Date 1/4/19

Indian PHILOSOPHY

PAGE NO.:
DATE / /20

जैन का आत्मा और जीव

जीव जैन दर्शन का आत्म-तत्व है वह एक आत्मिक तत्व है। यद्यपि जैन दर्शन एक नास्तिक विचारधारा है तथा उसका आत्म संबंधी विचार अन्य नास्तिक दर्शनों के आत्म संबंधी विचार जैसे चार्वाक और बौद्ध नास्तिक विचारधाराओं नित्य आत्मा के अस्तित्व का निषेध प्रस्तुत होता है चार्वाक दर्शन शरीर को ही आत्मा कहती है और चेतना को उसके गुण जबकि बौद्ध दर्शन शरीर से भी आत्मा नहीं मानता तथापि वह नित्य आत्मा की सत्ता को भी नहीं स्वीकार करता। बौद्ध दर्शन में आत्मा क्षणिक विचारों का प्रवाह मात्र है, पंचस्कन्धों का संघात है जैन दर्शन का आत्मा संबंधी विचार उपयुक्त विचारों से भिन्न है।

जैन दर्शन में आत्मा शरीर एवं इन्द्रियों से भिन्न एक चेतन सत्ता है। वह आत्मा को एक द्रव्य मानता है और चेतना को उसका स्वरूप या नित्य धर्म, चेतना के अभाव में जीव का अस्तित्व संभव नहीं है। जैन दर्शन यह भी कहता है की जीव में कुछ आगन्तुक धर्म (गुण) भी होते हैं जो उसमें आते जाते रहते हैं सुख दुःख इच्छा संकल्प आदि जीव के आगन्तुक गुण हैं, जीव में चेतना स्थिर है नित्य धर्म है इसके विपरीत सुख दुःख आदि उत्पत्ति एवं विनाश के अधीन है अर्थात जीव में उत्पत्तिव्ययध्रौव्ययुक्तं सत् - द्रव्य का यह लक्षण पाया जाता है।

जैन दर्शन के अनुसार जीव सत्तामात्र पूर्ण है उसमें अनन्त चतुष्टय है अर्थात चार प्रकार की पूर्णताएँ पाई जाती है, वे है (i) अनन्त ज्ञान, (ii) अनन्त दर्शन, (iii) अनन्त वीर्य और (iv) अनन्त आनन्द

Teacher's Signature

जीव के ~~लिए~~ ये स्वाभाविक धर्म मुक्त जीवों में अभिव्यक्त जैन दर्शन चेतना की अभिव्यक्ति के आधार पर जीवों का वर्गीकरण करता है, यह सर्वप्रथम जीव के दो भेद करता है,

(1) मुक्त जीव (ii) बद्ध जीव

मुक्त जीवों में जीव के स्वाभा के स्वरूप का पूर्ण प्रकाशन होता है उनमें अनन्त चतुष्टय जाता है इन जीवों के कर्म बंधन समाप्त हो चुके हैं और वे मोक्ष प्राप्त कर चुके हैं,

। बद्ध जीव वे है जो अभी कर्म पुद्गलों से आक्रान्त है (फंसे हुए) जैन दर्शन बद्ध जीवों के भेद करता है, (i) त्रस और (ii) स्थावर

त्रस जीव गतिमान और स्थावर जीवो मे गति नहीं होती, स्थावर जीवो मे जी के स्वरूप की न्यूनतम अभिव्यक्ति होती है उनके पांच है, (i) पृथ्वीकायिक जलकायिक (iii) वायुकायिक (iv) अग्निक और (v) वनस्पतिकायिक

इनमे केवल एक इन्द्रिय स्पर्शेन्द्रिय पाई जाती है, त्रस जीवों के स्थावर जीवो की अपेक्षा चेतना अधिक विकसित होती है, चैतन्य की अभिव्यक्ति की दृष्टि त्रस जीवों के चार भेद होते हैं — (1) द्विइन्द्रिय जीव ⟶ इन जी को स्पर्श इन्द्रिय एवं रसेन्द्रियों दो इन्द्रियाँ प्राप्त होती है जैसे ~~उदाहरण~~ जैसे — सीप घोंघा।

(ii) त्रिइन्द्रियाँ जीव — वे जीव जिन्हे तीन इन्द्रियाँ प्राप्त होती है जैसे — स्पर्श इन्द्रिय रसेन्द्रिय और घ्राणेन्द्रिय पिपीलिका ~~पिपीलिका~~ (चींटी)

(iii) चतुर्थ इन्द्रिय जीव — इन जीवों में चार इन्द्रिय प्राप्त होती है स्पर्शेन्द्रिय, रसेन्द्रिय घ्राणेन्द्रिय चक्षुरिन्द्रि जैसे — भ्रमर और मक्खी आदि,

A ⟶

Δ

पंचेन्द्रिय जीव – इन जीवो मे पाँच सानेन्द्रिया – स्पर्शेन्द्रिय, रसेन्द्रिय घ्राणेन्द्रिय, चक्षुन्द्रिय, कर्णेन्द्रिय – का पूर्ण विकास हो चुका है, जैसे – मनुष्य, पशु, पक्षी आदि।

उपर्युक्त विवेचन से यह तथ्य भी प्रकाश मे आता है कि जैन दर्शन अनेक जीववाद में विश्वास करता है। इसकी मान्यतानुसार जीव अनेक है। यह संसार त्रस और स्थावर जाति के अनन्त जीवो से व्याप्त है, ये सभी जीव पूर्णता प्राप्ति के दिशा में अग्रसर है। इस प्रकार गुणो के तारतम्य के आधार पर जीवो के अनन्त भेद है। सम्पूर्ण लोक जीवों से भरा पड़ा है। इन बन्धन ग्रस्त जीवों के अतिरिक्त नित्य सिद्ध जीव है जो कभी शरीर ही नही धारण करते। नरकवासी और देवलोकवासी जीव तथा मुक्त जीव है। इस प्रकार जैन दर्शन में अद्वैत वेदान्त ~~एकात्म~~ एकात्मवाद जीवो की अनेकता का वर्णन समर्थन किया जाता है। जैन दर्शन का यह विचार सांख्य के दर्शन के पुरुष बहुत्व अवधारणा के नजदीक है। जीवो का वर्गीकरण निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट किया गया है –

- जीव
  - मुक्त जीव
  - बद्ध जीव
    - स्थावर जीव
      - एकेन्द्रिय जीव
        - (i) पृथ्वी कायिक
        - (ii) जल कायिक
        - (iii) वायु कायिक
        - (iv) अग्नि कायिक
        - (v) वनस्पति कायिक
    - त्रस जीव
      - (ii) द्वीन्द्रिय जीव (सीप)
      - (iii) त्रीन्द्रिय जीव (पिपीलिका)
      - (iv) चतुरिन्द्रिय जीव (भ्रमर)
      - (v) पंचेन्द्रिय (मनुष्य)